एंज्वॉयमेंट / शिखर चंद जैन

अगले महीने से समर वेकेशन यानी गर्मी की छुट्टियां शुरू हो जाएंगी। इस दौरान हो सकता है, तुम किसी हिल स्टेशन पर या दादी-नानी के घर घूमने जाओ। लेकिन अगर तुम कहीं नहीं जा रहे हो तो कुछ ऐसी क्रिएटिव-एंटरटेनिंग एक्टिविटीज कर सकते हो जिसमें तुम्हें मजा तो आएगा ही बहुत कुछ नया सीखने को भी मिलेगा। ऐसे ही कुछ आइडियाज के बारे में जानो।

समर वेकेशन को बनाओ क्रिएटिव-एंटरटेनिंग

गर्मी की छुट्टियों में अगर कहीं घूमने का प्लान ना हो तो बच्चे घर में बोरियत महसूस करने लगते हैं। ऐसा तुम्हारे साथ ना हो इसके लिए आने वाली समर वेकेशन के लिए क्या तुमने कोई प्लानिंग की है? अगर नहीं तो हम तुम्हें यहां बता रहे हैं, वेकेशन के बेस्ट यूज करने के आइडियाज।

बनाओ कलर्ड कॉमिक्स

बच्चों, तुम खूब कहानी और कॉमिक्स पढ़ते ही होगे, लेकिन कितना मजा आए अगर तुम खुद अपनी लिखी हुई किसी कहानी के आधार पर खूब सारे रंगीन चित्र बनाओ और अपना खुद का कॉमिक्स तैयार करो! अगर तुम खुद कहानी न लिख पाओ तो फिर किसी रोचक घटना के आधार पर या फिर अपनी पढ़ी हुई किसी पसंदीदा कहानी के आधार पर भी स्केच पेन या क्रेयॉन कलर्स के इस्तेमाल से एक प्लेन पेपर नोटबुक में कॉमिक्स बना सकते हो। हो सके तो अपने दोस्तों को भी इसके लिए मोटिवेट करना फिर सब एक-दूसरे की तैयार की गई कॉमिक्स मजे से पढ़ना।

बालकोनी में लगाओ बर्ड फीडर

गर्मी के दिनों में जैसे चिलचिलाती धूप, उमस और प्यास से हम बेचैन हो जाते हैं, वैसे ही पशु-पक्षी भी परेशान रहते हैं। तुम चाहो तो अपने घर की बालकोनी, छत या सामने पड़ी खाली जगह को एक शानदार बर्ड फीडिंग स्टेशन बना सकते हो। यहां पक्षियों के लिए पानी से भरे कुंडारे, बड़े सिकोरे या अन्य बर्तन और उनके चुगने की व्यवस्था करने के लिए दाने भरे फीडर लगा सकते हो। इससे पक्षियों को दाना-पानी तो मिलेगा ही तुम्हें भी उनकी अठखेलियां देखने और मधुर चहचहाहट सुनने का मौका मिलेगा। इस स्टेशन पर जब गौरैया, कबूतर, तोते और मैना आदि तरह-तरह के पक्षी सुबह शाम जुटेंगे तो तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा।

बनाओ पजल्स और गेम्स

गेम्स और पजल्स खेलने में तो खूब मजा आता है। लेकिन कितना अच्छा हो कि अपनी कल्पनाशक्ति से तुम खुद ही नए-नए गेम्स और पजल्स बना डालो। जिगशॉ पजल बनाने के लिए किसी प्रसिद्ध इमारत, पक्षी या सेलिब्रिटी की तस्वीर लेकर उसे कार्डबोर्ड पर चिपका दो। फिर इसे जगह-जगह से काट कर अलग कर दो। इसी तरह-तरह कोई अलग सा बोर्ड गेम बनाकर तुम अपने फ्रेंड्स के साथ खेल सकते हो।

करो वाल पेंटिंग

अगर तुम्हारे घर के सामने या पिछवाड़े में कोई बगीचा है या छत पर तुमने गमले वगैरह रखे हैं या फिर बरामदे की बाहरी दीवारें रास्ते की तरफ से नजर आती हैं तो तुम यहां सुबह या शाम के समय सुंदर-सुंदर पेंटिंग बनाकर इन दीवारों को सजा सकते हो, इन्हें आकर्षक बना सकते हो। फूलों, पक्षियों, तितलियों आदि के चित्र से दीवारें बहुत सुंदर नजर आएंगी। साथ ही तुम्हें म्यूरल पेंटिंग की प्रैक्टिस का मौका भी मिलेगा। इसी तरह तुम चाहो तो प्लांटर्स और गमलों को भी तरह-तरह के पेंट से सजाकर उन्हें आकर्षक लुक दे सकते हो।

बनाओ फैमिली हिस्ट्री बुक

कई बार तुम्हें अपने मम्मी-पापा के मम्मी-पापा का नाम तो पता होता है लेकिन इसके बाद यानी परदादा-परदादी, परनाना-परनानी का नाम मालूम नहीं होता। इन छुट्टियों में तुम अपनी फैमिली ट्री को जानने की कोशिश कर सकते हो। मम्मी-पापा से उनके जन्मस्थान, वहां से जुड़ी बातें, खास रीति-रिवाज, वहां का विशेष खान-पान, उनकी खास यादें और उनके पैरेंट्स के साथ-साथ ग्रैंड पैरेंट्स का नाम भी पूछो। इन सारी बातों को चित्रों और तस्वीरों के साथ एक नोटबुक में सुंदर तरीके से लिखो। जन्म स्थान के गांव, कस्बे या शहर की कोई जानकारी भी लिखो। अपने नजदीकी रिश्तेदारों की भी जानकारी भी इसमें लिख सकते हो। यह सब जानकर तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा और तुम जो नोटबुक बनाओगे, वह अपने आप में एक फैमिली डॉक्यूमेंट जैसा बन जाएगा।

सीखो नई स्किल

इन छुट्टियों का इससे अच्छा उपयोग और क्या होगा कि तुम इस दौरान कोई नई स्किल सीख लो। समर वेकेशन में नई भाषा, कोई म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट बजाना, क्राफ्ट वर्क जैसे पेपर क्विलिंग, ओरिगामी, डेकोपेज (किसी वस्तु पर विशेष कलर इफेक्ट, सजावटी चीजों के साथ रंगीन कागज के कट आउट चिपकाकर उन्हें सजाने की कला) जैसी कलाएं सीखने में बहुत मजा आएगा। जब तुम कोई नई स्किल, भाषा या आर्ट सीख लोगे तो स्कूल खुलने पर अपने दोस्तों के सामने उसका प्रदर्शन करके अपना इंप्रेशन भी जमा सकोगे और टीचर भी खूब शाबासी देंगे। तो बच्चों, यहां दिए गए आइडियाज में से कोई भी आइडिया सेलेक्ट करके तुम आने वाली समर वेकेशन को खूब क्रिएटिव और एंटरटेनिंग बना सकते हो। *

कुछ बच्चे बहुत जिज्ञासु स्वभाव के होते हैं। वे किताबें पढ़कर, अपने से बड़ों से सवाल करके अपनी नॉलेज बढ़ाते रहते हैं। हिमानी भी इन्हीं बच्चों में से है। एक दिन उसने अपने दादा जी से सवाल किया कि समुद्र का पानी खारा क्यों होता है? दादा जी ने उसे जो जानकारी दी, तुम्हारा जानना भी जरूरी है।

समुद्र का पानी क्यों होता है खारा

नॉलेज जोन / अशोक जोशी

हिमानी की आदत है, वह स्कूल में सिर्फ अपने टीचर से ही नहीं, घर पर अपने दादा जी या पापा से भी ऐसी जानकारियां लेती रहती है, जिससे उसका ज्ञानवर्धन हो। हिमानी का स्वभाव अपनी हर जिज्ञासा को शांत करना है। कई दिनों से उसके दिमाग में एक प्रश्न कौंध रहा था कि समुद्र का पानी खारा क्यों होता है? आज उसने अपने दादा जी से यह सवाल पूछ ही लिया। हिमानी ने जानना चाहा, 'दादा जी, सारी नदियां जाकर समुद्र से मिलती हैं। नदियों का पानी मीठा रहता है, जबकि सारी नदियों का पानी समाहित करने वाले समुद्र का पानी खारा होता है। मेल-जोल का परिणाम तो मीठा होना चाहिए। लेकिन नदियों और सागर का संगम खारा क्यों?'

दादा जी मन ही मन हिमानी के इस प्रश्न पर खुश हुए फिर बोले, 'शाबास बेटा, तुम जिस तरह अपनी नॉलेज बढ़ाने के लिए प्रश्न पूछती रहती हो, यह बहुत अच्छी बात है।' एक पल रुककर दादा जी आगे बोले, 'हां, हिमानी बेटा मैं भी यही मानता हूं कि मेल-जोल का परिणाम तो मीठा होना चाहिए। लेकिन इस मेल-जोल में किसी तरह की मिलावट नहीं होनी चाहिए। जब नदियां अपने स्रोत से निकलती हैं तो मीठी और साफ ही होती हैं। लेकिन समुद्र तक पहुंचते-पहुंचते रास्ते में इनमें कारखानों से निकलने वाली गंदगी और हमारे द्वारा डाले जा रहे कचरे के कारण ये गंदी हो जाती हैं। जब समुद्र में नदियों के साथ इतनी अशुद्धियां और इतनी गंदगी और प्रदूषण आता है तो इसका खारा होना स्वाभाविक ही है। यह तो हमारे समझने की बात है। लेकिन यदि विज्ञान की दृष्टि से देखा जाए तो महासागरों और समुद्रों के पानी में सबसे अधिक क्लोरीन और सोडियम के आयन मौजूद होते हैं। ये दोनों आयन मिलकर महासागरों में घुले आयनों का 85 फीसदी हिस्सा बनाते हैं। इसके बाद मैग्नीशियम और सल्फेट 10 फीसदी हिस्सा बनाते हैं। इनके अलावा बाकी आयनों की मात्रा बहुत कम होती है। इसलिए, हमें समुद्र का पानी हमेशा खारा लगता है। दूसरा कारण खारे पानी का यह है कि समुद्रों में सबसे ज्यादा नमक नदियों से आता है। कहा जाता है कि बारिश का पानी थोड़ा अम्लीय होता है, जब यह पानी जमीन की चट्टानों पर पड़ता है, तो उसका अपरदन कर देता है, इससे बनने वाले आयन नदी के रास्ते समुद्रों में मिल जाते हैं। इससे समुद्र का पानी खारा होता रहता है।' दादा जी ने हिमानी से पूछा, 'क्या तुम बता सकती हो कि दुनियाभर के समुद्रों में कितना नमक होता होगा?'

'नहीं दादा जी..!' हिमानी ने ना में सिर हिला दिया। दादा जी ने बताया, 'अमेरिका के नेशनल ओशियाना और एटमोस्फियरिक एडमिनिस्ट्रेशन के अनुसार यदि सभी समुद्रों से पूरा नमक निकाल कर जमीन पर फैला दिया जाए तो उसकी परत 500 मीटर ऊंची हो जाएगी।' 'अरे बाप रे! कहते हुए हिमानी ने आश्चर्य से अपनी आंखों की पुतलियां घुमा दीं, जिसे देखकर दादा जी को हंसी आ गई। हिमानी भी दादा जी के साथ हंस पड़ी। *

जीके क्विज-101

1. पिछले दिनों आईपीएल के इतिहास में सर्वाधिक शतक लगाने वाले खिलाड़ी कौन बने हैं?
2. हाल ही में किस 17 वर्षीय शतरंज खिलाड़ी ने सबसे कम उम्र में कैंडिडेट्स शतरंज टूर्नामेंट जीतकर विश्व रिकॉर्ड बनाया?
3. अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस कब मनाया जाता है?
4. किस अंग्रेज को मुगल शासक जहांगीर ने 'खान' की उपाधि से सम्मानित किया था?
5. भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व किसने किया था?
6. भारत में हरित क्रांति का जनक किसे माना जाता है?
7. एक्स-रे की खोज किस भौतिक वैज्ञानिक ने की थी?
8. भारतीय संविधान सभा के पहले अंतरिम अध्यक्ष कौन थे?
9. 'भारत-भारतियों के लिए', यह नारा किस महापुरुष ने दिया था?
10. संसार का सबसे छोटा पक्षी कौन-सा है?

बच्चों, जीके क्विज-101 का उत्तर बालभूमि के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। सही जवाब देने वाले बच्चों के नाम भी प्रकाशित किए जाएंगे। तुम अपने जवाब हमें **balbhoomihb@gmail.com** पर मेल कर सकते हो।

जीके क्विज-100 का उत्तर : 1. मीराबाई चानू, 2. 24 अप्रैल, 3. गगनशक्ति-2024, 4. लोकतांत्रिक गणराज्य कांगो, 5. मंगूभाई सी. पटेल, 6. ईरान, 7. शुक्र, 8. नाइट्रस ऑक्साइड, 9. ऑर्निथोलॉजी, 10. अबुल फजल

जीके क्विज-100 का सही उत्तर देने वाले : आकांक्षा-अहमदाबाद, शिवाय-भोपाल, येणु-धमतरी, कबीर-हिसार, रश्मि-जबलपुर, ईशान-अहमदाबाद, तानिया-धमतरी, राहुल-हिसार, सरबजीत-करनाल, वेदांत-मेल से, पाखी-बिलासपुर, नितिन-कोरबा

हंसगुल्ले

मम्मी : खरगोश और कछुए की कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?
गोलू: मम्मी, यही कि रेस भले ही हार जाओ, पर नींद पूरी होनी चाहिए।
-अंकेश, रायपुर

टीचर : पानीपत की दूसरी लड़ाई के बाद क्या हुआ?
राजू : सर, इतिहास की किताब में रटने के लिए एक और चैप्टर बढ़ गया।
-शांतनु, भिलाई

टीचर : बताओ, अंग्रेजों के खिलाफ पहली क्रांति कब हुई थी?
रोनित : सर, मुझे कैसे पता होगा? मैं तो उस वक्त था ही नहीं।
-नेहा, भोपाल

साइंस टीचर : बच्चों, सभी ग्रह अपनी-अपनी कक्षा में घूमते रहते हैं।
कुणाल : सर, अगर वे अपनी-अपनी कक्षा में घूमते रहते हैं, तो पढ़ते कब हैं?
-ज्योत्सना, रोहतक

कहानी
हरीशचंद्र पांडे

रोनित ने रविवार के दिन घर में रहकर कोई अच्छा काम करने की सोची। जब अच्छा काम करने लगा तो सब उल्टा-पुल्टा होने लगा। उसके कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा है? अंत में उसकी बुआ जी के आने से माजरा एकदम उसके पक्ष में बन गया।

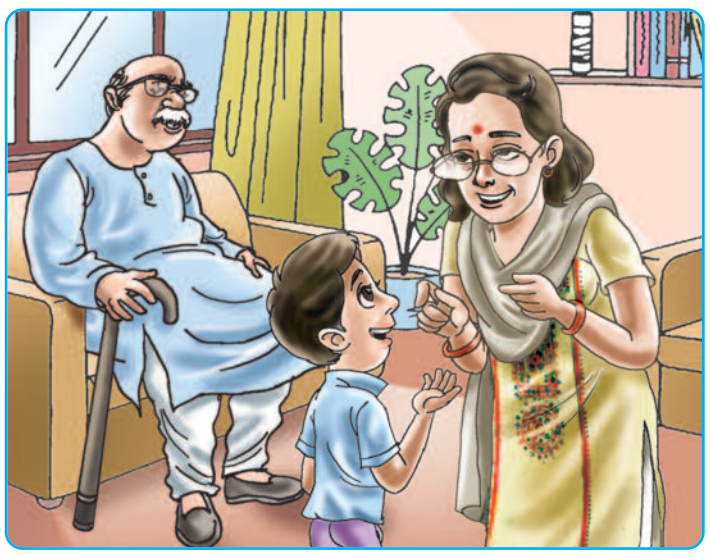

सबसे प्यारा रोनित!

रोनित सुबह से यही सोच रहा था, आज रविवार है, कोई अच्छा काम करे, लेकिन क्या करे? यही सोचता हुआ वह बिस्तर से उठकर बाहर बरामदे में आ गया। इधर-उधर गौर से देखा, सोच-विचार किया, उसके दिमाग में आया, 'अरे! गमले के पौधे प्यासे हैं, इन्हें पानी दिया जाए।' पास ही नल के नीचे बाल्टी भरी हुई दिखी, उसने तुरंत उसे उठाया और सारा पानी गमलों में डाल दिया। तभी मम्मी जोर से चिल्लाईं, 'अरे! यह पानी तो दादा जी के नहाने के लिए था। गमले में तो मैंने अभी-अभी पानी डाला है। रोनित तुम भी क्या करते रहते हो...!'

'अरे मम्मी! सॉरी...।' कहकर रोनित वहां से सरपट भागा। भागकर पापा के कमरे में आया। वहां देखा, पापा आराम कुर्सी पर बैठकर मजे से टीवी देख रहे हैं। रोनित ने उनको टोका, 'पापा उठिए और सीधे बैठ जाइए। आप तो बहुत गलत ढंग से बैठे हैं। इसीलिए आपकी पीठ और कमर में दर्द रहता है।' 'अरे, बेटा आज रविवार के दिन यह लेक्चर क्यों दे रहे हो? इसी तरह आराम से बैठे रहने दो।' पापा बैठे-बैठे बोले।

'हमारी योगा टीचर कहा करती हैं, यह बैठने का गलत तरीका है। उठिए और सीधे बैठिए।' रोनित ने पापा से फिर कहा।

तभी पापा के मोबाइल पर किसी का फोन आ गया। वह सीधे खड़े हो गए और टहल-टहल कर बात करने लगे। रोनित की सलाह बेकार चली गई।

रोनित अपने बड़े भैया के पास अजीब-सी शक्ल बनाकर पहुंचा। वह खिड़की से बाहर पड़ोसी चौधरी अंकल के पेड़ के पके-पके अमरूद ध्यान से देख रहे थे। रोनित को लगा, भैया को अमरूद खाना है। वह बोला, 'ओह, मेरे बड़े भैया, मैं कब आपके काम आऊंगा?' यह कहकर वह झट से स्टोररूम में गया, वहां से एक डंडा ले आया। भैया ने मुड़कर देखा, चौंक कर बोले, 'रोनित यह क्या शरारत है?'

वह तुरंत बोला, 'आपके लिए अमरूद तोड़ूं, इसीलिए मैं डंडा लाया हूं।'

'ओहो! तुम्हें पता है यह पेड़ हमारा नहीं है। तब भी तुम डंडा ले आए। कमाल करते हो, लगता है तुम्हारे पास कोई काम नहीं है। चलो, अब यह डंडा वहीं रखो जहां से लाए हो।' भैया ने रोनित को डांटा।

रोनित ने उलटे पैर जाकर डंडा उसी जगह पर रख दिया। तभी उसे अपने बगीचे में माली काका आते दिखे। उसने सोचा, माली काका बहुत बुजुर्ग हैं। अब इनका हाल-चाल पूछ लेता हूं। यह सोचकर वह बाहर आया और झुककर नमस्ते कर के बोला, 'नमस्ते माली काका, आप कैसे हैं?'

माली काका को हंसी आ गई। वह रोनित से बोले, 'अरे अच्छे हैं बेटा।'

'अच्छा, आप सचमुच बहुत अच्छे हैं।' एक पल रुककर रोनित ने फिर पूछा, 'कैसे हैं माली काका आप, अच्छे हैं ना?'

'अरे बिटवा तुम्हें क्या हो गया है? बार-बार काहे हाल-चाल पूछ रहे हो, चलो हमको काम करने दो।' हंसते हुए यह कहकर माली काका अपने काम में लग गए।

रोनित अब पहुंचा अपने दादा जी के पास। वह चुपचाप बैठे थे। रोनित उनकी खामोशी की वजह समझ गया। वह दादा जी से बोला, 'अच्छा तो आपने फिर से मम्मी-पापा से छुपकर चीनी खाई है।'

'अरे रोनित, क्या बोल रहे हो! तुम्हारे मम्मी-पापा सुन लेंगे तो आफत कर देंगे। जरा धीरे से बोलो।' दादा जी मुंह पर अंगुली रखते हुए बोले।

रोनित आहिस्ता से बोला, 'हां... हां... आपने जरूर चीनी खाई है, शुगर बढ़ गई है, इसीलिए चुपचाप बैठे हैं। है ना दादा जी!'

दादा जी को डर था कि रोनित के मम्मी-पापा चीनी वाली बात सुन ना लें। इसलिए वह रोनित से बोले, 'अब तुम चुपचाप ही बैठो तो सही रहेगा।'

'तो ठीक है दादा जी, मैं अब चुपचाप ही रहता हूं। आज सुबह जब से जागा हूं, तब से कोई मेरी सुन ही नहीं रहा।' रोनित चुपचाप एक ओर जाकर बैठ गया।

'अरे, मैं तो सुन रही हूं।' किसी ने पीछे से थपकी दी। रोनित ने मुड़कर देखा, सामने बुआ जी खड़ी हुई थीं। वह जोर से चहका, 'अरे बुआ जी आप..!'

'अरे हां रोनित, तुमने कितनी प्यारी चिट्ठी लिखी थी। मैं उसे पढ़ते ही यहां आ गई। बेटा, तुम हो सबसे प्यारे और यह देखो मैं तुम्हारे लिए टी-शर्ट लाई हूं। देखो, इसमें क्या लिखा है, सबसे प्यारा रोनित।'

'वाह! थैंक क्यू मेरी प्यारी बुआ!' खुशी से उछलते हुए रोनित बोला।

घर के लोग रोनित की बुआ जी के आने से बहुत खुश थे। रोनित अपनी बुआ जी के साथ बैठकर मीठी गपशप में लग गया था। परिवार के लोग भी बैठे उनकी बातें हंसते हुए सुन रहे थे। *

कविता
इंद्रजीत कौशिक

फुग्गे

फुग्गे वाला फुग्गे लेकर
जब मेले में आया,
ले-लो, ले-लो फुग्गे ले लो
कह कर के चिल्लाया।
नीले, पीले, हरे, गुलाबी
कुछ का रंग था लाल,
बन मतवाले झूम रहे थे
फुग्गे बड़े कमाल।
बच्चों ने जब फुग्गे देखे
झटपट दौड़े आए,
एक नहीं दो-दो लेकर के
मन ही मन हर्षाए।
लेकर फुग्गे बच्चों ने जब
उन्हें हवा में छोड़ा,
ऐसे उड़े हवा में वे तो
जैसे चेतक घोड़ा।

अंतर बताओ

बच्चों, यहां एक जैसे दिख रहे दो चित्रों में 6 अंतर मौजूद हैं। इन दोनों चित्रों को ध्यान से देखो और पांच मिनट में सभी अंतर खोजो।

उत्तर- 1.बायीं तरफ खड़ी लड़की के बगल में खड़े डॉग का मुंह बंद है। 2.दाहिनी ओर खड़ी लड़की के साथ वाले डॉगी का दायां हाथ उठा हुआ है। 3.बीच वाला लैंप-पोस्ट गायब है। 4.बायीं तरफ से तीसरी बिल्डिंग गायब है। 5.बीच में खड़े लड़के की दायीं आस्तीन मुड़ी हुई है। 6.पीछे दायीं ओर खड़े लड़के के बगल में एक डॉगी है।

गिनकर बताओ

बच्चों, यहां दिए गए चित्र में कई सारे पक्षी दिख रहे हैं। तुम्हें गिनकर बताना है कि इस चित्र में कुल कितने पक्षी हैं?

उत्तर-17

बताओ कौन-सा है जानवर

1
एक डाल से दूसरी डाल पर,
उछल-कूद से मेरा नाता,
नकल करने में हूं उस्ताद,
केला बड़े शौक से खाता।

2
घने बालों वाला मैं प्राणी,
शहद मुझे बहुत भाता।
सुस्तराम सब कहते मुझे,
खिलौनों से मेरा है नाता।

3
रेगिस्तान का जहाज हूं मैं,
कम पानी में करता गुजारा।
विशालकाय है मेरा शरीर,
उस पर है इक कूबड़ न्यारा।

4
उम्र मेरी लंबी बहुत,
शरीर वज्र सा मजबूत।
धीमी गति से चलता मैं
निरंतरता का देता सुबूत।

-डॉ. अलका जैन 'आराधना'

उत्तर : 1. बंदर 2. भालू 3. ऊंट 4. कछुआ